7

संस्कृत साहित्य में विश्वनाथभट्ट का अवदान

दीपक पाण्डेय

सारांश

17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रख्यात संस्कृत विद्वान, कवि एवं संन्यासी विश्वनाथ भट्ट के व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनके बहुआयामी साहित्यिक अवदान का विस्तृत एवं सप्रमाण मूल्यांकन तथा महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण परिवार से संबंध रखने वाले विश्वनाथ भट्ट ने अपना अधिकांश सक्रिय जीवन काशी के विद्या केंद्र और आमेर राजघराने विशेषकर राजा रामसिंह और सवाई जयसिंह के सान्निध्य में व्यतीत किया। उनके द्वारा रचित तीन प्रमुख ग्रंथ **'शृंगारवापिका'** नाटिका, **'रामविलासकाव्यम्'**ऐतिहासिक, कर्मकांडीय एवं प्रशस्ति काव्य, और **'शम्भुविलास'**विशुद्ध भक्ति काव्य,संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। प्रो पी के गोडे के अनुसंधानों तथा 'रामविलासकाव्यम्' के आधार पर कवि के ऐतिहासिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक विकास क्रम को सप्रमाण उद्घाटित करता है।

संकेतशब्द 'शृंगारवापिका रामविलासकाव्यम् रामसिंह जयसिंह

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के इतिहास में मध्यकालीन युग के उन विद्वानों का विशेष महत्त्व है जिन्होंने न केवल साहित्य सृजन किया, अपितु अपने काल की ऐतिहासिक एवं कर्मकांडीय घटनाओं का प्रत्यक्ष अभिलेखीकरण भी किया। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना के तत्कालीन क्यूरेटर स्वर्गीय प्रो पी के गोडे ने १७वीं और १८वीं शताब्दी के एक ऐसे ही महान चित्तपावन ब्राह्मण कवि विश्वनाथ रानाडे के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला है। प्रो गोडे द्वारा प्रकाशित शोध के अनुसार, विश्वनाथ भट्ट ने आमेर जयपुर के राजाओं के दरबार और काशी के आध्यात्मिक परिवेश के बीच अपना जीवन व्यतीत किया।[1] 1662 ई में रचित 'अद्वैतसुधा' में यह स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि विश्वनाथ आध्यात्मिक कारणों से महाराष्ट्र छोड़कर काशी में बस गए थे।[2]

---

[1] 'जर्नल ऑफ बी बी आर ए सोसाइटी' (खंड 17, पृष्ठ 43-55)

[2] 'अद्वैतसुधा'

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

वंश परंपरा, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं गुरु परंपरा - कवि विश्वनाथ का पारिवारिक और शैक्षणिक आधार अत्यंत सुदृढ़ था।विश्वनाथभट्ट ने अपने ग्रंथ **'शृंगारवापिका**

इति श्रीचित्तपावनजातीयरानडोपनामकविश्वनाथकविकोविदविरचितायां शृंगारवापिकायां नामनाटिकायाम्[3]

विश्वनाथ महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण परिवार से थे तथा उनका गोत्र भारद्वाज था। उनकी गोत्रावली में उनका उपनाम 'रानाडे' पाया जाता है। औफ्रेच्टमें भी उन्हें रानाडे उपनाम वाले चित्तपावन परिवार का बताया गया है।[4]पूर्वजऔफ्रेच्ट के अनुसार, विश्वनाथ के पिता का नाम महादेव था। उनके पितामह का नाम विष्णु भट्ट कोविद और प्रपितामह का नाम हरि भट्ट पंडित था।[5]गुरु परंपरामें विश्वनाथ भट्ट ने अपनी शिक्षा काशी के मूर्धन्य विद्वानों से प्राप्त की। उनके पहले गुरु 'निर्णयसिंधु' नामक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय ग्रंथ के लेखक कमलाकर भट्ट थे। उनके दूसरे गुरु धुंडिराज थे, जिन्हें 'व्यासयज्वन' के नाम से भी जाना जाता था। धुंडिराज वैदिक अनुष्ठानों वैदिकाध्वर विद्ध के प्रकांड विद्वान थे, जिन्होंने 1713 ई में 'मुद्राराक्षस' पर टीका और संगीत पर 'शाहविलास' नामक ग्रंथ लिखा था। विश्वनाथ ने अपने ग्रंथों के आरंभ में अपने गुरुओं की भावपूर्ण वंदना की है, और 'शम्भुविलास' में तो गुरु के नाम के आगे सम्मानसूचक छह 'श्री' (श्रीषट्केन समन्वितं लगाने की परंपरा का निर्वाह किया है।विश्वनाथ भट्ट भारद्वाज गोत्र के महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण परिवार से थे, जिनका उपनाम 'रानाडे' था। औफ्रेच्ट के कैटलॉगस कैटलॉगोरम में भी उन्हें रानाडे उपनाम वाले चित्तपावन परिवार के विश्वनाथ कहा गया है।[6]
'रामविलासकाव्यम्' के प्रथम सर्ग के अंत में अपनी पहचान स्पष्ट की है

"यो जात्या भुवि चित्तपावन इति ख्यातस्ततोपाख्यया

विख्यातः खलु रानडा इति जडाज्ञानापहानौ कृती । [7]

विद्या की राजधानी काशी में विश्वनाथ भट्ट ने मूर्धन्य मनीषियों से शिक्षा ग्रहण की।उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने दो प्रमुख गुरुओं का स्मरण किया है**कमलाकर भट्ट**ये प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय ग्रंथ 'निर्णयसिंधु' के रचयिता थे। 'शृंगारवापिका' में विश्वनाथ को स्पष्ट रूप से श्री कमलाकर के शिष्य श्रीकमलाकरान्तेवासि कहा गया है।**धुंडिराज**विश्वनाथ के दूसरे गुरु धुंडिराज व्यासयज्वन थे, जो

---

[3]शृंगारवापिका प्रत्येक अंक समाप्ति पर

[4]'कैटलॉगस कैटलॉगोरम' (CC. III, 123)

[5]वही (CC. II, 13)

[6]वही (CC. III, 123)

[7]'रामविलासकाव्यम्' सर्ग 1, श्लोक 51)

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

वैदिक अनुष्ठानों के प्रकांड विद्वान थे। विश्वनाथ ने 'शृंगारवापिकाएवं'रामविलासकाव्यम्' के मंगलाचरण अपने गुरु धुंडिराज की स्तुति से ही किया है

"तस्मै वैदिकतान्त्रिकाध्वरविदे श्रीढुण्डिराजाय मे

विश्वस्मिन् स्थिरकीर्तयेऽस्ति गुरवे सद्बुद्धिदात्रे नमः ॥ [8]

राजकीय सान्निध्य, शिक्षक रूप एवं आध्यात्मिक जीवन

विश्वनाथ भट्ट का जीवन राज्याश्रय और वैराग्य का एक अनूठा संगम था।**रामसिंह के शिक्षक** 1666 ई में जब मिर्ज़ा राजा जयसिंह द्वारा बनारस में स्थापित संस्कृत कॉलेज में राजकुमार रामसिंह अध्ययन कर रहे थे जिसका उल्लेख फ्रांसीसी यात्री टैवर्नियर ने किया है, तब विश्वनाथ भट्ट संभवतः उनके शिक्षकों में से एक थे। 'शृंगारवापिका' नाटक के सूत्रधार के कथन से स्पष्ट है कि विश्वनाथ भट्ट ने कृपापूर्वक रामसिंह को पढ़ाया था और यह ग्रंथ उन्हें समर्पित किया था, जिसे रामसिंह ने अत्यंत आदर के साथ स्वीकार किया।[9]**आमेर राजघराने से जुड़ाव**सवाई जयसिंह के गुरु रत्नाकर दीक्षित के पिता देव भट्ट का आमेर राजघराने में बहुत सम्मान था, और स्वयं राजा रामसिंह उनकी पूजा करते थे। 'रामविलास' के तृतीय सर्ग में देव भट्ट के पांडित्य और उनके द्वारा गंगा तट पर किए जाने वाले पंच महायज्ञों का वर्णन है। यह प्रबल संभावना है कि देव भट्ट और उनके परिवार जिनसे विश्वनाथ जुड़े हुए थे के माध्यम से ही विश्वनाथ का परिचय आमेर राजघराने से हुआ।

"मान्यः सर्वमहीभृतां विजयते श्रीरामसिंहचितो

वेदार्थस्य विचारकृत् प्रतिदिनं पुत्रादिभिः शोभितः ॥ [10]

संन्यास और वैराग्य 'अद्वैतसुधा' और 'शम्भुविलास' के साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि जीवन के अंतिम चरण में विश्वनाथ सांसारिक सुखों से विरक्त हो गए थे। उन्होंने संपूर्ण दृश्य प्रपंच को मिथ्या मानकर परम आनंद के स्रोत 'राजराजेश्वरी' का स्मरण करते हुए काशी के 'शिव वन' में स्थायी निवास स्थितिनिर्ममे बना लिया था। 1709 ई वि संवत 1766) के पश्चात वे पूर्णतः उदासीनमतिः वैरागी हो गए थे।[11]

शृंगारवापिका नाटिका

---

[8]शृंगारवापिकाएवंरामविलासकाव्यम् मंगलाचरण

[9]रामविलासकाव्यम् भूमिका पृ स

[10]वही तृतीय सर्ग श्लोक 14

[11]वही भूमिका पृ स

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

यह विश्वनाथ भट्ट की प्रारंभिक और एकमात्र प्राप्त नाट्य रचना है। जोकि मेरे शोध का विषय है यह चार अंकों की एक नाटिका है। कृष्णामाचार्यके अनुसार, इसमें अवंती के राजा चंद्रकेतु और चंपावती की राजकुमारी कांतिमती के प्रेम का वर्णन है। विश्वनाथ भट्ट ने यह नाटिका 1667 ई के आसपास, राजा रामसिंह के सिंहासन पर बैठने के बाद उनके अनुरोध पर लिखी थी।[12]नाटिका का कथानक इस प्रकार है। उज्जैन के राजा चंद्रकेतु और चंपावती के राजा रत्नपाल की बेटी कान्तिमती को पहली बार एक सपने के माध्यम से प्यार हुआ। स्वप्निल राजकुमारी से मिलने के लिए राजा चंद्रकेतु ने मुंडमाला के माध्यम से सिद्ध योगिनी से संपर्क स्थापित किया। योगिनी चंपावती के पास जाती है ताकि चंद्रकेतु उससे मिलने के लिए वहां जाए। चन्द्रकेतु को वहां राजा का आतिथ्य प्राप्त होता है इस तरह दोनों का प्यार तब चरम पर पहुंच जाता है जब उनकी मुलाकात अपनी प्रिय नायिका से होती है इस अवसर पर मुंडमाला कुल देवी से प्रार्थना करती है और कुल देवी रत्नपाल को स्वप्न में निर्देश देती है कि कान्तिमती और चंद्रकेतु से विवाह करना उचित है। इस प्रकार नायक और नायिका के बीच पाणिग्रहण संस्कार होता है।

प्रदर्शन का उद्देश्य एवं काल राजा रामसिंह को यह नाटिका इतनी पसंद आई कि उन्होंने अपने इकलौते पोते 'उत्तराधिकारी'

1682 ई में मृत्यु हो गई थी, उस समय विष्णुसिंह केवल 11 वर्ष के थे। अतः इस प्रेम कथा 'शृंगारवापिका' 1682 ई से 1688 ई रामसिंह की मृत्यु के मध्य किया गया होगा।[13]

रामविलासकाव्यम्

यह विश्वनाथ भट्ट की महत्त्वपूर्ण रचना है, जिसकी दो पांडुलिपियाँ 'क' खासमोहर, और 'ख' पुंडरीक प्राप्त हुई हैं। 'क' पांडुलिपि संवत 1766 में तुलाराम द्वारा लिखी गई थी। इस ग्रंथ के चार सर्गों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है।[14]

प्रथम सर्ग सवाई जयसिंह के युद्ध कौशल का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कवि ने अपने गुरु धुंडिराज, गणेश, शिव, कृष्ण, सूर्य और देवी की स्तुति के बाद सवाई जयसिंह को त्रेता युग के राम का अवतार घोषित किया है, जो यवनों का नाश करने के लिए आमेर में अवतरित हुए हैं। श्लोक 11 से 32 तक कछवाहा वंश की मानसिंह से लेकर सवाई जयसिंह तक की वंशावली दी गई है, जिसमें भावसिंह का नाम छोड़कर कुमार जगतसिंह की सीधी वंशावली बताई गई है। इसके पश्चात 3 अक्टूबर 1708 ई को हुए

[12]हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल लिटरेचर, 1937

[13]रामविलासकाव्यम् भूमिका पृ स

[14]वही

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

'सांभर युद्ध' का वर्णन है।[15]

तुरुष्क फौजदार पर आक्रमण किया। इसमें कुम्भानी, नाथवत, खंडेला, नरुका, खंगारोत और शेखावत आदि राजपूत कुलों के शौर्य का वर्णन है।

"लङ्कायां पुरि राक्षसैः सह यथा रामो महावीर्यवान्

युद्धं श्रीजयसिंह एष यवनैः सार्द्धं पुनः मृष्टवान् ॥ [16]

युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद सवाई जयसिंह ने ब्राह्मणों के बीच दान बांटा,

द्वितीय सर्ग यह सर्ग सवाई जयसिंह की प्रशस्ति और काव्यात्मक अलंकारों का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।यह सर्ग विशुद्ध रूप से सवाई जयसिंह की प्रशस्ति है। इसमें कोई ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि प्रत्येक श्लोक उपमा, रूपक और अन्य अलंकारों से सजी कवि की कल्पना की उड़ान का उत्कृष्ट उदाहरण है।

तृतीय सर्ग यह सर्ग तत्कालीन श्रौत कर्मकांडों का सबसे प्रामाणिक साक्ष्य है। सवाई जयसिंह द्वारा आमेर में संपन्न कराए गए 'वाजपेय यज्ञ' का विवरण है। यज्ञ का संचालन उनके गुरु रत्नाकर दीक्षित ने किया था। कवि ने 16 ऋत्विजों पुजारियों के नाम और उनके गोत्र दिए हैं जैसे कर्नाटक के हरिकृष्ण अध्वर्यु थे, भीमपुर के शिवराम सोमप्रवाक थे। इन पुजारियों को चार समूहों - अध्वर्युगण, ब्रह्मगण, होतृगण और उद्गातृगण - में बाँटा गया था।[17] , 11 चमसाध्वर्यु नियुक्त किए गए थे। कवि ने एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में दीक्षणीयेष्टि, प्रायणीयेष्टि, सोम क्रय सफेद कान वाली गाय के बदले , आतिथ्येष्टि, प्रवर्ग्य, उपसद और आग्नीषोमीय याग पशुविधि के साथ का सजीव वर्णन किया है। अंत में रथ दौड़और अवभृथ स्नान का भी उल्लेख है।

"शके विक्रमार्कस्य राज्ञः पवित्र।

मनोहारके पञ्चषट्सप्तचन्द्रैः १७६५

शुभाङ्कैमिते हायने गच्छंमाने [18]

इसमें 16 ऋत्विजों का भी प्रामाणिक उल्लेख है, जैसे

---

[15]रामविलासकाव्यम् भूमिका पृ स

[16]रामविलासकाव्यम् सर्ग 1, श्लोक 45)

[17]रामविलासकाव्यम् भूमिका पृ स

[18]वही सर्ग 3, श्लोक 11)

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

"चक्रे षोडशऋत्विगादिवरणं श्रीदेवभट्टात्मजः [19]

इस यज्ञ का समर्थन आत्माराम कवि रचित समकालीन ग्रंथ**'सवाई जयसिंह चरित'**से भी होता है, जिसमें वाजपेय यज्ञ के स्थान श्याम बाग का उल्लेख है

"वाजपेयमष उत्तम लेषि ।।कीन्हों स्याम बाग आरम्भ । [20]

और ब्राह्मणों को दी गई प्रचुर दक्षिणा का वर्णन 'रामु कबि' (आत्माराम करते हैं

"पाई तहाँ पीछैं जिन दक्षिनां ऊ भूरिसी निहारी तिन धामनि धनद कैसी भूरिसी ॥ [21]

चतुर्थ सर्ग यह सर्ग शृंगार रस और दार्शनिक चिंतन से ओतप्रोत है। निर्गुण ब्रह्म का सगुण रूप में प्रकट होना वर्णित है

"यो निर्गुणोऽपि समभूत् सगुणो भवति यदीयीत्

[22]

अंत में कवि यह काव्य सवाई जयसिंह को पुष्कर में समर्पित कर शिव की नगरी काशी चले जाते हैं

एवं श्रीजयसिंहनामनृपति संतोष्य पद्यैनिजैः

श्रीरामस्य कलावतारमवनौ श्रीविश्वनाथः कविः ।

पूर्णायाथ समर्प्य काव्यसुकृतं तस्मै वरे पुष्करे

काव्यं कर्तुमगाद् द्वितीयमुचितं काश्यां शिवस्यालये ॥[23]

यह सर्ग दार्शनिक और शृंगारिक है। श्लोक 2 में 'काम' को परम सत्य की गुणात्मक इच्छा और सृष्टि का मूल कारण बताया गया है, जिससे निर्गुण ब्रह्म अपनी शक्ति के साथ ब्रह्मा, विष्णु और शिव तथा उनकी शक्तियों सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती के रूप में प्रकट हुआ। अंत में कवि श्लोक 69 में बताते हैं कि यह काव्य पुष्कर में राजा जयसिंह को समर्पित कर, वे एक और उपयुक्त काव्य रचने हेतु शिव की नगरी काशी लौट गए।

शम्भुविलास

---

[19]वही सर्ग 3, श्लोक 2)

[20]'सवाई जयसिंह चरित' दोहा स

[21]'सवाई जयसिंह चरित' दोहा स

[22]रामविलासकाव्यम् सर्ग , श्लोक)

[23]रामविलासकाव्यम् सर्ग , श्लोक)

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

यह कवि विश्वनाथ की अंतिम रचना है। डॉ एगेलिंग के कैटलॉग के अनुसार, इसकी एकमात्र पांडुलिपि लंदन की इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में मौजूद है।

स्वरूप एवं तिथियह भगवान शिव को समर्पित एक विशुद्ध भक्ति काव्य है। इसमें कुल तीन सर्ग हैं प्रथम में 40, द्वितीय में 80 और तृतीय में 14 श्लोक हैं। इसके द्वितीय सर्ग के अंत में संवत 1776 माघ सुदी त्रयोदशी भौमवासरे 11 फरवरी 1720 ई अंकित है। 'रामविलासकाव्यम्' की रचना 1709 ई में हुई थी, अतः 'शम्भुविलास' की रचना 1709 से 1720 ई के मध्य काशी में हुई। यह ग्रंथ प्रमाणित करता है कि जीवन के अंतिम काल में विश्वनाथ भट्ट पूर्णतः संन्यासी हो गए थे और उन्होंने अपना जीवन शिव की आराधना में समर्पित कर दिया था।[24]

निष्कर्ष

विश्वनाथ भट्ट का साहित्यिक कर्तृत्व बहुआयामी है। जहाँ 'शृंगारवापिका' उनके नाट्य कौशल और राज्याश्रित कवि होने का प्रमाण है, वहीं 'रामविलासकाव्यम्' उनके ऐतिहासिक दृष्टि, अलंकारिक ज्ञान और जटिल श्रौत कर्मकांडों की गहरी समझ का जीवंत प्रमाण है। अंत में, 'शम्भुविलास' उनकी आध्यात्मिक यात्रा की पूर्णता और वैराग्य का प्रतीक है। 17वीं और 18वीं शताब्दी के इतिहास, विशेषकर आमेर राजघराने और तत्कालीन ब्राह्मण विद्वानों की बौद्धिक परंपरा को समझने के लिए विश्वनाथ भट्ट की रचनाएँ एक अपरिहार्य ऐतिहासिक एवं साहित्यिक स्रोत हैं।संस्कृत साहित्य के इतिहास में विश्वनाथ भट्ट का योगदान अत्यंत प्रामाणिक और विशिष्ट है। वे एक कुशल कवि, वैयाकरण, श्रौत कर्मकांड विशेषज्ञ और एक निस्पृह संन्यासी थे। 'शृंगारवापिका' उनकी रचनात्मकता का, 'रामविलासकाव्यम्' तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं सांभर युद्ध एवं श्रौत कर्मकांडों वाजपेय यज्ञ के जीवंत साक्ष्य, तथा 'शम्भुविलास' उनकी दार्शनिक गहराई का परिचायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Aufrecht, T. *Catalogus Catalogorum* (CC. I, CC. II, CC. III).
- Bahura, G. N. (1977). *Ramavilasakavyam*. Maharaja Sawai Mansingh Memorial Series (Publication No. 3), Jaipur.
- Eggeling, J.*Catalogue of India Office Library Manuscripts* (Part VII).
- Gode, P. K. Vishwanath Mahadeva Ranade, a Chittapavan, court-poet of Raja Ram Singh I. *Journal of B.B.R.A. Society* (New Series, Vol. 17).
- Krishnamachariar, M. (1937). *History of Classical Sanskrit Literature*.
- Pandit, L. (1662). *Advaitasudha*.

[24]रामविलासकाव्यम् भूमिका भाग पृ स

Volume 5, Issue 2, 2026, p 56-62, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University